कृषि नवाचार

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 03 भाग 06 सितम्बर, 2026

फूलों का प्रोग्राम्ड उत्पादन: तय तारीख पर फूल तैयार करें और पाएं 2 से 3 गुना ज्यादा मुनाफा

विकास यादव[1*], रूपाली शर्मा[1] और संदीप भारद्वाज[2]

[1]बागवानी विभाग, चौ. चरण सिंह, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा, भारत

[2]बेसिक इंजीनियरिंग विभाग, चौ. चरण सिंह, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा

***E-mail: vikasydv100@gmail.com**

मंडी में जब एक साथ सभी किसानों की फसल पहुंचती है, तो भारी आवक के कारण गेंदे और दूसरे फूलों के दाम गिरकर 15 से 20 रुपये प्रति किलो पर आ जाते हैं। वहीं दिवाली, गणेश चतुर्थी, वैलेंटाइन डे या शादियों के लगन में यही फूल 120 से 200 रुपये प्रति किलो तक बिकते हैं। मौसम के भरोसे फसल छोड़ने के बजाय अगर बाजार की मांग और त्योहारों की तारीखों के हिसाब से बुआई तय की जाए, तो वही खेत कई गुना ज्यादा कमाई दे सकता है।

उल्टी गिनती का गणित (बैकवर्ड शेड्यूलिंग)

ज्यादातर किसान रोपाई के दिन से आगे की गिनती करते हैं। इसमें तरीका उल्टा अपनाना होता है। मंडी में माल बेचने की तारीख (टारगेट डेट) को पहले चुनें और वहां से पीछे की तरफ दिन गिनें।

1. **टारगेट डेट चुनें:** उस त्योहार या शादियों के मुहूर्त की तारीख तय करें जब मांग और भाव सबसे ज्यादा रहते हैं।
2. **फसल की अवधि घटाएं:** अपनी किस्म की तैयार होने की अवधि (जैसे 70, 80 या 90 दिन) को टारगेट डेट में से घटा दें।
3. **रोपाई और छंटाई का समय निकालें:** इससे रोपाई, पिंचिंग और खाद देने की सही तारीखें मिल जाती हैं।

उदाहरण के लिए, अगर 10 नवंबर की दिवाली के लिए गेंदा चाहिए और किस्म 75 दिन लेती है, तो रोपाई अगस्त के आखिरी हफ्ते में पूरी हो जानी चाहिए।

टुकड़ों में रोपाई (स्टैगर्ड प्लांटिंग)

एक ही दिन पूरे खेत में रोपाई करने से सारा माल एक साथ तैयार होता है। अगर उसी हफ्ते मंडी मंदी रही, तो पूरा नुकसान उठाना पड़ता है। पूरे खेत को 3 से 4 हिस्सों में बांट लें। हर हिस्से में 7 से 10 दिन के अंतर पर रोपाई करें। इससे 3 से 4 हफ्तों तक लगातार ताजा फूल मिलते रहते हैं। अगर किसी एक हफ्ते भाव कम भी मिले, तो अगले हफ्ते बढ़े हुए दामों से उसकी भरपाई हो जाती है।

भारतीय बाजारों के लिए टारगेट कैलेंडर

फूलों की मांग सीधे त्योहारों और शादियों से जुड़ी है। क्षेत्र के हिसाब से यह खाका काम आता है:

- **अगस्त से सितंबर (गणेश चतुर्थी, ओणम):** गेंदा, रजनीगंधा और गुलदाउदी की मांग बढ़ती है।
- **अक्टूबर से नवंबर (दुर्गा पूजा, दिवाली, देवउठनी एकादशी):** पीले और सफेद फूलों के साथ गेंदे के रेट सबसे ऊंचे होते हैं। इसके तुरंत बाद शादियों का सीजन शुरू होता है।
- **जनवरी (मकर संक्रांति, पोंगल, 26 जनवरी):** खुले और कट-फ्लावर्स दोनों की स्थिर मांग रहती है।
- **फरवरी (वैलेंटाइन वीक):** लाल गुलाब और जरबेरा के दाम कई गुना बढ़ जाते हैं।

पिंचिंग से फूल खिलने का समय बदलना

पौधे की ऊपरी कलियों को काटने (पिंचिंग) से मुख्य तने की बढ़त रुकती है और बगल से नई शाखाएं निकलती हैं। इससे फूलों की संख्या बढ़ती है और खिलने की तारीख 15 से 20 दिन आगे खिसक जाती है।

- **गेंदा और रजनीगंधा:** रोपाई के 30 से 35 दिन बाद मुख्य तने के ऊपरी 2 से 3 सेंटीमीटर हिस्से को काट दें। फूल खिलने में 15 से 18 दिन की देरी होगी।
- **गुलदाउदी और कार्नेशन:** पिंचिंग की तारीख तय करके सभी पौधों में एक साथ, ठीक लक्षित हफ्ते में फूल लाए जा सकते हैं।

लाइट कंट्रोल तकनीक (ब्लैकआउट और नाइट-ब्रेक)

गुलदाउदी और गेंदे की कुछ किस्मों को कलियां बनाने के लिए 11 से 13 घंटे के लगातार अंधेरे की जरूरत होती है।

- **अगेती फसल के लिए (ब्लैकआउट):** दोपहर 4 बजे से सुबह 7 बजे तक फसल को काले पॉलीथिन या शेड-नेट से ढक दें। अंदर रोशनी न पहुंचे। इससे पौधा 2 से 3 हफ्ते पहले फूल देने लगता है।

कृषि नवाचार
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 03 भाग 06 सितम्बर, 2026

- **फसल को आगे बढ़ाने के लिए (नाइट-ब्रेक):** अगर फूल आने में 10 से 15 दिन की देरी करनी हो, तो रात के बीच में 1 से 2 घंटे के लिए कम रोशनी वाले बल्ब जलाएं। पौधा वेजिटेटिव फेज में ही रहेगा और कली देरी से बनाएगा।

कोल्ड स्टोरेज से कंद (बल्ब्स) का प्रबंधन

ट्यूलिप, लिलियम और ग्लैडिओलास जैसी फसलों में कंद की सुप्त अवस्था को नियंत्रित करके रोपाई का समय तय किया जाता है। रोपाई से पहले कंदों को 2 से 4 डिग्री सेल्सियस पर कोल्ड स्टोरेज में रखा जाता है। इस चिलिंग ट्रीटमेंट से कंदों की सुप्त अवस्था टूटती है और खेत में लगाने पर पौधे एक समान गति से बढ़ते हैं। चिलिंग का समय 1 से 2 हफ्ते घटा-बढ़ाकर रोपाई का समय बदला जा सकता है।

ग्रोथ रेगुलेटर और न्यूट्रिशन ट्यूनिंग

उर्वरक और रसायनों के सही इस्तेमाल से फसल की रफ्तार बदली जा सकती है:

- **फसल तेजी से पकाने के लिए:** टारगेट डेट पास हो और कलियां छोटी हों, तो जिबरेलिक एसिड का छिड़काव करें। कलियां तेजी से बढ़ेंगे और डंडी लंबी होगी।
- **फसल को रोकने के लिए:** अगर फूल तय तारीख से हफ्ता भर पहले खिलने लगें, तो पैक्लोबुट्राजोल या साइकोसेल छिड़ककर बढ़त कुछ दिन रोक दें।
- **पोषक तत्व:** तय तारीख से 2 हफ्ते पहले नाइट्रोजन कम करके पोटेशियम और बोरॉन देने से फूलों का रंग गहरा होता है और डंडियां मजबूत बनती हैं।

कटाई के बाद पल्सिंग

फूल सही समय पर टूट जाए लेकिन रास्ते में खराब हो जाए, तो मेहनत बेकार जाती है। कटाई के तुरंत बाद डंडियों को 2 से 4 घंटे के लिए शक्कर (सुक्रोज) और सिट्रिक एसिड के घोल में डुबाएं। यह घोल तनों में नमी और पोषण बनाए रखता है। इससे फूल रास्ते में मुरझाते नहीं और उनकी शेल्फ लाइफ 5 से 7 दिन बढ़ जाती है, जिससे दिल्ली, मुंबई या बेंगलुरु जैसी दूर की मंडियों में माल भेजा जा सकता है।

शेड-नेट और पॉलीहाउस का उपयोग

खुले खेत में तापमान और बारिश पर वश नहीं होता, जिससे फूल खिलने का समय बदल सकता है।

- **50% शेड-नेट:** गर्मी में तापमान 3 से 5 डिग्री तक कम रखता है, जिससे कलियां झुलसती नहीं और डंडी सीधी बढ़ती है।
- **पॉलीहाउस:** नमी और तापमान नियंत्रण में रहने से सर्दियों में भी लिलियम और गुलाब की समय पर हार्वेस्टिंग संभव होती है।

फसल की एकसमान बढ़त के नियम

- **तापमान और रोशनी:** सही तापमान और दिन की लंबाई का ध्यान रखकर गुलदाउदी में फूल आने का सटीक समय साधा जा सकता है।
- **रोशनी का स्पेक्ट्रम:** नियंत्रित ढांचों में लाल और नीले प्रकाश वाली एलईडी लाइट पौधों को मजबूत बनाती है और फूल समय पर खिलते हैं।
- **संतुलित खुराक:** सही मात्रा में नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश और सल्फर देने से पूरा खेत एक साथ तैयार होता है, जिससे कटाई आसान हो जाती है।

सामान्य खेती और प्रोग्राम्ड उत्पादन की तुलना

बात	सामान्य खेती	प्रोग्राम्ड उत्पादन
बिक्री का समय	जब प्राकृतिक रूप से फूल आ जाएं	त्योहार या शादी के ठीक 3-4 दिन पहले
मंडी भाव	रु.15 से रु. 20 प्रति किलो	रु. 120 से रु.180 प्रति किलो
जोखिम	ज्यादा (अत्यधिक आवक से नुकसान)	कम (मांग के हिसाब से योजना)
मुनाफा	सीमित	3 से 4 गुना अधिक

निष्कर्ष

फूलों की खेती में मुनाफा इस बात पर निर्भर नहीं करता कि खेत में फूल कितने उगे हैं, बल्कि इस पर निर्भर करता है कि वे किस दिन बाजार पहुंचे हैं। पारंपरिक खेती में किसान मौसम के अनुसार कटाई करते हैं, जिससे जब मंडी में माल ज्यादा होता है तो सही दाम नहीं मिल पाता। प्रोग्राम्ड उत्पादन तकनीक के माध्यम से रोपाई की तारीख, पिंचिंग, प्रकाश प्रबंधन और पोषक तत्वों के उपयोग को नियंत्रित करके फसल को ठीक उस दिन बाजार में लाया जा सकता है जब मांग सबसे ज्यादा होती है। इन व्यावहारिक तकनीकों को अपनाकर किसान बाजार के उतार-चढ़ाव से बच सकते हैं और अपनी फसल का वाजिब मूल्य प्राप्त कर सकते हैं।